Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2023

भारत–अमेरिका संबंध : सहयोग, चुनौतियाँ और संभावनाएँ

डॉ. करण सिंह [1]

[1] **सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय कन्या महाविद्यालय झालामंड जोधपुर.**

ABSTRACT:

भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय संबंध बीते सात दशकों में काफी उतार-चढ़ाव से गुज़रे हैं। स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के बीच वैचारिक मतभेद और शीत युद्ध की राजनीति के कारण दूरी बनी रही। किंतु 1991 के आर्थिक उदारीकरण और 21वीं सदी की भू-राजनीतिक परिस्थितियों ने दोनों देशों को एक-दूसरे के और निकट ला दिया। आज भारत और अमेरिका केवल आर्थिक या सामरिक साझेदार नहीं हैं, बल्कि विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा और संस्कृति जैसे अनेक क्षेत्रों में परस्पर सहयोग कर रहे हैं। यह शोध पत्र भारत–अमेरिका संबंधों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वर्तमान सहयोग के विविध आयाम, प्रमुख चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि 21वीं सदी में भारत–अमेरिका संबंध केवल द्विपक्षीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था के लिए भी निर्णायक महत्व रखते हैं।

KEYWORDS:

भारत-अमेरिका संबंध, रणनीतिक साझेदारी, नागरिक परमाणु समझौता, रक्षा सहयोग, व्यापारिक संबंध, प्रवासी भारतीय, क्वाड (QUAD), विज्ञान और प्रौद्योगिकी, जलवायुपरिवर्तन, इंडो-पैसिफिक।

1. परिचय:-

भारत और अमेरिका दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। अमेरिका आर्थिक और तकनीकी रूप से विश्व की अग्रणी शक्ति है , वहीं भारत तेज़ी से उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। दोनों देशों की साझेदारी न केवल उनके द्विपक्षीय हितों के लिए महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन , आतंकवाद विरोध, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी प्रभावित करती है।

भारत–अमेरिका संबंधों को समझने के लिए हमें इन्हें तीन चरणों में बाँटना होगा:

1. 1947–1991: अविश्वास और मतभेदों का दौर।

2. 1991–2010: सहयोग और साझेदारी का प्रारंभिक चरण।

3. 2010 के बाद: रणनीतिक साझेदारी और बहुआयामी सहयोग का युग।

2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:-

(क) 1947–1960: शुरुआती अविश्वास

भारत ने स्वतंत्रता के बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) को अपनाया। वहीं अमेरिका शीत युद्ध में पश्चिमी खेमे का नेतृत्व कर रहा था। इस कारण अमेरिका को भारत की नीतियाँ सोवियत संघ की ओर झुकाव जैसी लगती थीं। अमेरिका ने इस दौरान पाकिस्तान को सैन्य व आर्थिक मदद दी, जिससे भारत–अमेरिका संबंधों में दूरी बनी रही।

(ख) 1970–1990: तनाव का दौर

1971 के बांग्लादेश युद्ध के समय अमेरिका ने पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया। 1974 में भारत द्वारा पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण करने के बाद अमेरिका ने भारत पर कड़े प्रतिबंध लगाए। इस कारण दोनों देशों के बीच अविश्वास गहराया।

(ग) 1991 के बाद: सहयोग की शुरुआत

भारत में आर्थिक उदारीकरण और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद संबंधों में नया मोड़ आया। अमेरिका ने भारत को निवेश और व्यापार के लिए एक बड़ा बाज़ार माना। 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद थोड़े तनाव के बावजूद 2005 में हुए भारत –अमेरिका सिविल न्यूक्लियर एग्रीमेंट ने दोनों देशों के संबंधों को नया आयाम दिया।

(घ) 2010–2025: रणनीतिक साझेदारी

2010 के बाद अमेरिका ने भारत को एशिया की रणनीति (Pivot to Asia) में एक महत्त्वपूर्ण भागीदार माना। रक्षा समझौते , व्यापार बढ़ोतरी और भारतीय प्रवासी समुदाय की भूमिका ने संबंधों को और मज़बूत किया। आज दोनों देशIndo-Pacific क्षेत्र की सुरक्षा में साथ काम कर रहे हैं।

3. वर्तमान सहयोग के प्रमुख क्षेत्र:-

(क) आर्थिक सहयोग

अमेरिका भारत का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। 2023–24 में द्विपक्षीय व्यापार 190 अरब डॉलर तक पहुँच गया।

आईटी और सेवा क्षेत्र में भारत की कंपनियाँ अमेरिकी अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं।

अमेरिकी कंपनियाँ भारत में स्टार्टअप्स, नवीकरणीय ऊर्जा और विनिर्माण में निवेश कर रही हैं।

भारतीय प्रवासी समुदाय (Indian Diaspora) लगभग 45 लाख लोगों का है , जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु का कार्य करता है।

(ख) रक्षा और सामरिक सहयोग

LEMOA (2016), COMCASA (2018), BECA (2020) जैसे समझौतों से दोनों सेनाओं के बीच इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ी है।

अमेरिका अब भारत का तीसरा सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता है।

QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) के माध्यम से दो नों देश इंडो -पैसिफिक क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

संयुक्त सैन्य अभ्यास (Malabar Exercise) दोनों सेनाओं के बीच सहयोग को मजबूत कर रहे हैं।

(ग) विज्ञान और तकनीक

NASA और ISRO ने मंगल मिशन और NISAR सैटेलाइट जैसे प्रोजेक्ट्स पर मिलकर काम किया है।

साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सेमीकंडक्टर और अंतरिक्ष तकनीक में सहयोग बढ़ रहा है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में कोविड-19 वैक्सीन निर्माण और वितरण में भी दोनों देशों ने सहयोग किया।

(घ) ऊर्जा और पर्यावरण

अमेरिका और भारत International Solar Alliance (ISA) के भागीदार हैं।

स्वच्छ ऊर्जा, हाइड्रोजन तकनीक और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग चल रहा है।

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर दोनों देशों ने 2030 तक कार्बन उत्सर्जन घटाने की प्रतिबद्धता जताई है।

(ङ) शिक्षा और संस्कृति

अमेरिका भारतीय छात्रों के लिए उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा गंतव्य है। लगभग 2 लाख भारतीय छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं।

हॉलीवुड–बॉलीवुड सहयोग और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने सामाजिक स्तर पर रिश्तों को और मजबूत किया है

4. प्रमुख चुनौतियाँ:-

1. व्यापारिक मतभेद: टैरिफ, वीज़ा नीतियाँ और बौद्धिक संपदा अधिकार पर असहमति।

2. रणनीतिक मुद्दे : रूस और ईरान के साथ भारत के संबं धों को लेकर अमेरिका की असहमति।

3. चीन नीति : अमेरिका चाहता है कि भारत चीन के विरुद्ध अधिक स्पष्ट रुख अपनाए , जबकि भारत "रणनीतिक स्वायत्तता" पर जोर देता है।

4. मानवाधिकार और लोकतंत्र: अमेरिका द्वारा भारत की आंतरिक नीतियों (जैसे कश्मीर या अल्पसंख्यक अधिकार) पर टिप्पणी से समय-समय पर तनाव उत्पन्न होता है।

5. रक्षा तकनीक हस्तांतरण : अमेरिका अब भी कुछ संवेदनशील तकनीकों के ट्रांसफर में संकोच करता है।

5. भविष्य की संभावनाएँ:-

(क) ऊर्जा सहयोग

नवीकरणीय ऊर्जा, हाइड्रोजन और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में और गहन सहयोग होसकता है।

(ख) डिजिटल और तकनीकी साझेदारी

5G, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सेमीकंडक्टर निर्माण और साइबर सुरक्षा में दोनों देश मिलकर वैश्विक मानक तय कर सकते हैं।

(ग) रक्षा उत्पादन

भारत में संयुक्त रक्षा उत्पादन और तकनीकी हस्तांत रण से "मेक इन इंडिया" अभियान को गति मिल सकती है।

(घ) वैश्विक मंच पर सहयोग

जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद विरोध, आपूर्ति श्रृंखला की सुरक्षा और अफ्रीका–एशिया में विकास परियोजनाओं पर मिलकर कार्य।

6. निष्कर्ष:-

भारत–अमेरिका संबंध आज ऐतिहासिक रूप से सबसे मज़बूत स्थिति में हैं। दोनों देश लोकतांत्रिक मूल्यों, साझा सुरक्षा हितों और आर्थिक अवसरों के आधार पर एक -दूसरे के पूरक बन चुके हैं। चुनौतियाँ अवश्य हैं, किंतु निरंतर संवाद और सहयोग से इन्हें सुलझाया जा सकता है।

21वीं सदी को अक्सर "एशियाई सदी" कहा जाता है, और इसमें भारत–अमेरिका साझेदारी निर्णायक भूमिका निभा सकती है। यदि दोनों देश पारस्परिक विश्वास और रणनीतिक दूरदर्शिता से आगे बढ़ते हैं , तो यह संबंध न केवल द्विपक्षीय , बल्कि वैश्विक शांति और विकास के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

REFERENCES

1. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय – द्विपक्षीय संबंध रिपोर्ट।
2. U.S. Department of State – India–U.S. Relations Fact Sheet.
3. Brookings Institution, Carnegie Endowment for International Peace – Research Papers.
4. The Hindu, Indian Express, Foreign Affairs – समाचार व शोध लेख।
5. NITI Aayog और नीति आयोग की रिपोर्ट्स।